MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - II

Time : 3 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 100**

विभाग 1 - गद्य

उ. 1. (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(8)**

(1) तालिका पूर्ण कीजिए। **2**

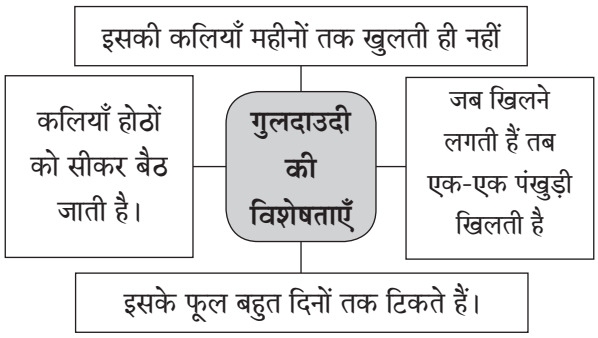

(2) उचित जोड़ियाँ मिलाइए। **2**

(i - घ), (ii - ग), (iii - ख), (iv - क)

(3) (i) **परिच्छेद में से शब्द-युग्म छाँटकर लिखिए।** **1**

(1) एक-एक (2) दो-एक

(ii) **निम्नलिखित तद्भव शब्दों के तत्सम शब्द लिखिए।** **1**

(1) होठ - ओष्ठ (2) आशीर्वाद - आशीष

(4) प्रकृति को ईश्वर का दूसरा रूप कहा जाता है। प्रकृति सुंदर होती है। उसके कई रूप होते हैं। पहाड़, झरने, पेड़, पौधे, फूल, तालाब, नदी, सागर आदि उसके विविध रूप हैं। प्रकृति के सान्निध्य में मानव का विकास होता है। वह उसे प्रेरित करती है। उसके सदाबहार रूप को देखकर इंसान को सत्यम-शिवम्-सुंदरम् का एहसास होने लगता है। महाकवि वाल्मीकि ने कविता लिखने की प्रेरणा प्रकृति से ही प्राप्त की। इसी प्रकृति के सान्निध्य में रहकर भगवान बुद्ध को आत्मज्ञान प्राप्त हुआ था। न्यूटन को गुरूत्वाकर्षण का सिद्धांत ढूँढ़ निकालने में इसी प्रकृति ने ही मदद की थी। जब हम चिंताग्रस्त हो जाते हैं; तब हम मानसिक शांति के लिए प्रकृति के ही सानिध्य में जाते हैं। इसलिए कहा गया है कि प्रकृति मानव-मन को प्रेरणा देती है। वह मनुष्य की सहचरी-सहगामिनी है। **2**

उ.1. (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए । **(8)**

(1) (i) संजाल पूर्ण कीजिए। **2**

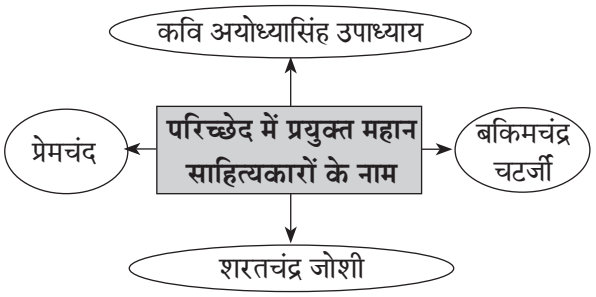

(ii) कृति पूर्ण कीजिए। **1**

लेखक	पुस्तक
बंकिमचंद्र चटर्जी	**आनंदमठ**
प्रभातकुमार मुखोपाध्याय	देशी और विलायती (उपन्यास)

(2) उत्तर लिखिए । **1**

१९२८-१९२९ में साइमन कमीशन के बहिष्कार के समय का लाठीचार्ज।

(3) (i) मानक वर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द लिखिए। **1**

(1) आनंदमठ (2) लाठीचार्ज

(ii) लिंग बदलिए। **1**

(1) कवि - कवयित्री (2) लेखक - लेखिका

(4) कविता लिखना एक सहज कला होती है। हर कोई इस कला में माहिर नहीं होता। कविता व्यक्ति सहज भाव से लिखता है। कविता भावना का उद्‌गार होती है। कविता लिखते समय व्यक्ति के मन में प्रसंगों की प्रतिमा अपने आप तैयार हो जाती है। फिर व्यक्ति उनकी अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से सहज रूप में करता है। यह एक ऐसी कला है जिसके लिए व्यक्ति का भावनाशील एवं संवेदनशील होना नितांत आवश्यक होता है। **2**

उ.1. (ग) अपठित परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(8)**

(1) कृति पूर्ण कीजिए।

(i) **इनके अनुरूप बाँटा तपस्या का फल** पात्र के अनुरूप **1**

(ii) असहयोग आंदोलन — *इस ऐतिहासिक आंदोलन का नाम परिच्छेद में आया है।* **1**

(2) (i) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) एक तपस्या (2) आती-जाती हल करती एक समस्या

(ii) **उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।** **1**

(1) बापू की छाती की हर साँस क्या थी ?

(2) गांधीजी कहाँ ठहरे थे ?

(3) **पहेली में से विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए।** **2**

(i) पात्र × अपात्र (ii) पास × दूर

(iii) जाड़ा × गर्मी (iv) आए × गए

(4) समय बड़ा मूल्यवान होता है। एक बार जो समय चला गया वह वापस नहीं आता। अत: हमें अपने जीवन में समय का सदुपयोग करना चाहिए। हमारा हर कार्य अपने समय पर और सुचारुरूप से पूर्ण हो, इसके लिए हमें समय का पूरा ध्यान रखना पड़ता है। यदि हम अपने कार्य को निर्धारित समय पर नहीं करते हैं तो वह कार्य या तो छूट जाता है या विलंब से होने के कारण हमारे शेष कार्य बाधित हो जाते हैं, जिससे हमारा नुकसान होता है। इसलिए निर्धारित समय पर कार्य न करना समय के साथ दगाबाजी है। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. **(च) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **(6)**

(1) **(i) समझकर लिखिए।**

(1) **छापामारों ने कवि से इन चीजों के बारे में पूछा** → सोना, चाँदी ½

(2) **छापामार इस प्रकार के पैसों की तलाश में थे** → अनधिकृत रूप से अर्जित पैसों के ½

(ii) सही या गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके फिर से लिखिए। **1**

(1) **गलत** : कवि के घर में आयकर विभाग के अधिकारी घुसे थे।

(2) **गलत** : छापामार कवि से सोना, अर्थ व चाँदी की माँग कर रहे थे।

(2) **कविता के आधार पर जोड़ियाँ मिलाइए।** **2**

अ	ब
अर्थ	कवि की नई कविताओं में
सुवर्ण	कवि की काव्य कृतियों में
चाँदी	कवि के बालों में
छापा	कवि के घर पर

(3)	**निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।** 'छापा' इस कविता के कवि श्री ओमप्रकाश हैं। उनके घर पर आयकर विभाग का बहुत बड़ा छापा पड़ा। आयकर विभाग के कई अधिकारी उनके घर पर पधारें। घर में आते ही उन्होंने कवि से कहा ''सोना कहाँ है?'' कवि ने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया, ''सोना तो मेरी आँखों में है क्योंकि कई रातों से मैं ठीक से सोया नहीं हूँ।'' वे आग बबूला होकर बोले ''हम सुवर्ण के बारे में बात कर रहे हैं।'' कवि ने भी जोश में आकर कहा, ''सुवर्ण तो मैंने अपनी कविताओं में बिखेरा है। उस सुवर्णों को मैं नहीं दे सकता।''	**2**
उ.2.	**(छ) निम्न मुद्दों के आधार पर निम्न कविता का पद्य विश्लेषण कीजिए:**	**(6)**
(i)	**समता की ओर**	
	(1) **कविता के कवि/रचनाकार का नाम** : कवि मुकुटधर पांडेय	**1**
	(2) **काव्य प्रकार** : छायावादी काव्य	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हमको भाई का करना उपकार नहीं क्या होगा, भाई पर भाई का कुछ अधिकार नहीं क्या होगा।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण** : प्रस्तुत पंक्तियाँ समाज में अमीर भाइयों को गरीब भाइयों की भलाई के बारे में विचार करने के लिए प्रवृत्त करती है। इन पंक्तियों में समाज से अमीरी-गरीबी का भेदभाव दूर करके समता स्थापित करने की बात बताई गई है। इसलिए प्रस्तुत पंक्तियाँ मुझे बेहद पसंद हैं।	**2**
	(5) कविता से प्राप्त संदेश : विश्व-बंधुत्व जैसी मानवीय भावना को अपनाकर एक-दूसरे के साथ बंधुत्व का व्यवहार करना।	**1**
	अथवा	
(ii)	**भारत महिमा**	
	(1) **रचनाकार का नाम** : जयशंकर प्रसाद	**1**
	(2) **रचना का प्रकार** : छायावादी आधुनिक काव्य	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : हिमालय के आँगन में उसे, किरणों का दे उपहार; उषा ने अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण**: सूर्योदय होने से कुछ पल पहले उषा रूपी किरणों का हिमालय के आँगन में आगमन हुआ। भारत देश में उदित होने वाली उषा अपने साथ सुनहरी किरणों को लेकर आई। मानो वह भारत का अभिनंदन कर उसे हीरों का हार पहना रही हो। इसमें कवि ने मानवीकरण अलंकार के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सुषमा का जो मनोहारी वर्णन किया है, वह अद्‌भुत व अतुलनीय है। अत: यह पंक्तियाँ मुझे अत्यंत प्रिय हैं।	**2**
	(5) **रचना से प्राप्त संदेश** : इस कविता से हमें यह संदेश प्राप्त होता है कि हमें अपने अतीत के गौरवशाली इतिहास को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने देश पर गर्व होना चाहिए और इस पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।	**1**

	अथवा	
(iii)	**अपनी गंध नही बेचूँगा**	
	(1) **रचनाकार का नाम**: बालकवि बैरागी	**1**
	(2) **रचना का प्रकार** : गीत	**1**
	(3) **पसंदीदा पंक्ति** : बिकने से बेहतर मर जाऊँ अपनी माटी में झर जाऊँ मन ने तन पर लगा दिया जो वो प्रतिबंध नहीं बेचूँगा।	**1**
	(4) **पसंदीदा होने का कारण**: उपर्युक्त पंक्ति में फूल अपने स्वाभिमान और सम्मान के लिए मर जाना और मरकर मिट्टी में झर जाना अधिक पसंद करता है। वह इस निर्णय पर किसी भी कीमत पर अडिग रहना चाहता है। यदि व्यक्ति में सम्मान और स्वाभिमान की भावना न हो तो उसका जीवन निरर्थक होता है।	**2**
	(5) **कविता से प्राप्त संदेश या प्रेरणा**: स्वाभिमान ही जीवन है। स्वाभिमान के बिना जीवन निरर्थक होता है। स्वाभिमान से व्यक्ति की सम्मान व प्रतिष्ठा बनी रहती है।	**1**
उ.**2**.	**(ज) अपठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**	**(6)**
(1)	**(i) आकृति पूर्ण कीजिए।**	**1**
	ग्वालों के साथ घर में घुस आते हैं । — **कृष्ण पर लगे आरोप** — चोरी करके माखन खाते हैं।	
	(ii) कृति पूर्ण कीजिए।	**1**
	कृष्ण अनोखा पुत्र है । — **गोपियों का ताना** — ऐसे पुत्र को यशोदा ने न जाने कैसे जन्म दिया ।	
(2)	**(i) मानक हिंदी भाषानुसार कविता में प्रयुक्त क्रियाओं का अर्थ लिखिए।**	**2**
	(1) खवायो - खिलाया (2) जायो - जन्म देना	

(3) **पद्यांश की तीसरी और चौथी पंक्ति का संदेश लिखिए।** **2**

गोपियाँ यशोदा मैया से शिकायत करते हुए कहती हैं कि हे मैया, सूने घर का दरवाज़ा खोलकर गोरस (दूध-दही-मक्खन) स्वयं खाया और सभी साथियों को भी खिलाया । कृष्ण ने खाट पर चढ़कर छींके में से मक्खन निकालकर खाया और कुछ लेकर नीचे गिरा दिया। इस तरह हर रोज गोरस (दूध-दही-मक्खन) का नुकसान हो रहा है ।

विभाग 3 - पूरक पठन

उ.3. **गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।** **(4)**

(1) **(i) समझकर लिखिए।** **1**

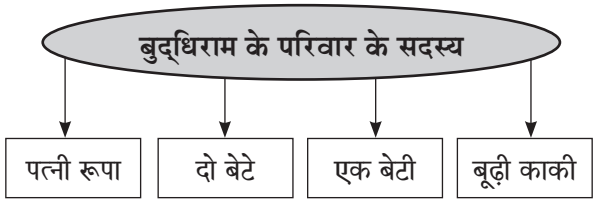

(ii) कारण लिखिए। **1**

क्योंकि उन्हें गँवार मंडली में बोलना अथवा सम्मिलित होना अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल लगता था।

(2) बच्चे मन के सच्चे व निष्पाप होते हैं। वे बड़ों का अनुसरण करते हैं। जिस प्रकार माता-पिता उन्हें संस्कार देते हैं; बच्चे उसी प्रकार उनका अनुसरण करते हैं। यदि उनके माता-पिता घर के बड़े बुजुर्ग यानी दादा-दादी का अपमान करते हैं, तो बच्चे भी उनका अनुसरण करते हुए दादा-दादी को भला-बुरा कहते हैं। यदि बच्चों को बचपन से ही अच्छी शिक्षा दी जाए और उन्हें अच्छे संस्कार दिए जाए तो बच्चे संस्कारी बनते हैं। उनमें मानवीय मूल्य संवर्धित होते हैं। इसलिए प्रत्येक अभिभावक का यह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दें एवं उनके सामने आपस में अच्छा व्यवहार व आचरण कर एक आदर्श स्थापित करें, ताकि बच्चे भी उनके सद्आचरण का अनुसरण करें। **2**

उ.3. **(आ) पद्यांश पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **(4)**

(1) **(i) वर्गीकरण कीजिए।** **1**

ऐतिहासिक	पौराणिक
लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, चाँद बीबी, पद्मिनी, रजिया सुलताना	सावित्री, सीता

(ii) **विशेषताओं के आधार पर पहचानिए।** **1**

(1) रानी लक्ष्मीबाई (2) लड़का-लड़की (स्त्री-पुरुष)

(2) प्रत्येक स्त्री में रानी लक्ष्मीबाई होती है। नारी माँ दुर्गा का रूप होती है। वह सबला होती है। यदि उसके साथ कोई बदलसलूकी करने की कोशिश करे, तो वह चंडिका का रूप धारण कर लेती है। रानी लक्ष्मीबाई की तरह वह तुरंत अपने अस्तित्व व अस्मिता के लिए लड़ने-मरने को तैयार हो जाती है। संघर्ष करके **2**

समाज के साथ लड़ने की ताकत उसमें होती है। आज हमारे देश की नारी अंतरिक्ष में जा रही है। वह वैमानिक बनकर आसमान में उड़ रही है। वैज्ञानिक बनकर वह अनुसंधान कर रही है। राजनीतिज्ञ बनकर देश को चला रही है। भारत की भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के अद्‌भुत कार्य को कोई भूल नहीं सकता है। इसलिए कहा जाता है कि प्रत्येक स्त्री में रानी लक्ष्मीबाई होती है।

विभाग 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **(18)**

(1) (i) **निम्नलिखित वाक्य में आए हुए संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके उनके भेद लिखिए।** **1**

सोनाबाई : व्यक्तिवाचक संज्ञा, **बच्चों** : जातिवाचक संज्ञा

(ii) **निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम का प्रयोग कीजिए।** **1**

वह रिसॉर्ट हमने पहले से बुक कर लिया है।

(2) (i) **निम्नलिखित वाक्य में से अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** **1**

और : समुच्चयबोधक अव्यय

(ii) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** **1**

बाद : संबंधसूचक अव्यय :

वाक्य : पता नहीं उसके बाद क्या हुआ ?

(3) कालपरिवर्तन कीजिए।

(i) सातों तारे मंद पड़ जा रहे हैं। **1**

(ii) मैं खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कह रहा था। **1**

(4) तालिका पूर्ण लिखिए । **1**

संधि	संधि-विच्छेद	भेद
स्वागत	सु + आगत	स्वर संधि
आसक्त	अन + आसक्त	स्वर संधि

(5) (i) **अर्थ के आधार पर निम्न वाक्य के भेद पहचानिए।** **1**

रहमान से गलती हो गई। (विधानार्थक वाक्य)

(ii) **सूचना के अनुसार निम्न वाक्य का प्रकार बदलिए** **1**

ज्यादा बातें नहीं हुईं।

(6) (i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए।** **1**

निजात पाना : छुटकारा पाना

वाक्य: परीक्षा से **निजात पाते** ही मैं भ्रमण पर निकला।

(ii) **निम्न वाक्य में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।** **1**

सिरचन को बुलाओ, **दुम हिलाता हुआ** हाजिर हो जाएगा।

(7) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखिए।

(i) रंगीन फूलों की माला बहुत सुंदर लग रही थी। **1**

(ii) बरसों बाद पंडित जी को मित्र के दर्शन हुए। **1**

(8) निम्न वाक्य में से मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया पहचानकर लिखिए। **1**

मुख्य क्रिया - आना सहायक क्रिया - पहुँची (पहुँचना)

(9) निम्नलिखित क्रियाओं के प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए। **1**

अ.क्र	क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
(i)	लिखना	लिखाना	लिखवाना
(ii)	जुटना	जुटाना	जुटवाना

(10) निम्नलिखित वाक्य में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग कर वाक्य पुनः लिखिए। **1**

मैंने कराहते हुए पूछा, ''मैं कहाँ हूँ?''

(11) निम्नलिखित वाक्य के रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित कारक चिह्नों से कीजिए और कारक का नाम लिखिए। **1**

रूपा घटना स्थल **पर** आ पहुँची।

पर - अधिकरण कारक

विभाग 5 - रचना विभाग **(32)**

उ.5. (अ) **5**

(1) (i) दिनांक - ५ मार्च, २०१८

सेवा में,

श्रीमान कोतवाल साहब,

शहर विभाग, कोल्हापुर।

विषय : सार्वजनिक गणेशोत्सव के समय ध्वनि प्रदूषण हेतु शिकायत पत्र।

माननीय महोदय,

मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। इस पत्र द्वारा मैं रिकॉर्ड बजने के कारण अध्ययन में पड़नेवाली बाधा की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

शहर में आजकल चारों तरफ गणेशोत्सव की धूम है। दिन-रात शहर में रिकार्ड बज रहे हैं। परीक्षा करीब है और पढ़ाई ठीक से नहीं हो पा रही है। आवाज़ इतनी तेज रहती है कि पढ़ने में मन नहीं लगता है। हम कई बार रिकार्ड बजानेवालों से शिकायत कर चुके हैं लेकिन उन्होंने हमारी बात पर ध्यान नहीं दिया। रिकार्ड बजाने की समय-सीमा निर्धारित होनी चाहिए, ताकि हम शांतिपूर्ण ढंग से अध्ययन कर सकें।

अतः आपसे प्रार्थना है कि विद्यार्थियों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उचित कार्यवाही करने

की कृपा करें।
कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।
धन्यवाद!
भवदीय,
करन वेद।
karanved226@gmail.com

अथवा

(ii) १० जनवरी, २०१८
प्रिय मित्र निकेतन,

सप्रेम नमस्ते।

निकेतन, तुम कैसे हो? आशा करता हूँ कि तुम ठीक होगे। मैं भी यहाँ पर ठीक हूँ।

कल ही मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि तुम्हें जिला विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह समाचार पढ़कर मैं फूला न समाया। इसलिए तुम्हें हार्दिक बधाई देने के लिए मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। तुम्हें विज्ञान में बेहद रूचि है। तुम हमेशा विज्ञान से संबंधित पुस्तकों का वाचन करते रहते हो। मुझे तुम पर बहुत गर्व महसूस हो रहा है। मुझे याद है, तुमने विज्ञान प्रदर्शनी के लिए मॉडल एवं प्रकल्प तैयार करने के लिए पिछले महीने से ही तैयारी शुरू कर दी थी। आखिर, तुम्हारी मेहनत रंग लाई और तुम्हें प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। तुम्हारे द्वारा निर्मित यह प्रकल्प तुम्हारी सृजनात्मकता एवं प्रतिभा की गवाही देता है। सचमुच, तुम मेरे मित्र हो, यह मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है। मेरे परिवार वालों ने भी तुम्हें हार्दिक बधाई दी है।

और क्या लिखूँ? तुम्हारी प्रशंसा के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं है। जैसे ही ग्रीष्मावकाश शुरू हो जाएँ वैसे ही तुम मेरे घर पर रहने के लिए आ जाना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा। अपनी माता जी एवं पिता जी को मेरा सादर प्रणाम कहना।

.....
कुमार संदेश जोशी
२०२, पारिजात,
नारायण मार्ग,
मुंबई ४०० ०२०.
kumarsandesh16@gmail.com

(2) (i) सभी क्या चाहते हैं? **5**
(ii) हमारे देश में कौन-कौन से धार्मिक स्थान हैं?
(iii) आज धार्मिक क्षेत्र में हमें किन-किन बातों की आवश्यकता है?
(iv) हर जगह क्या छिड़ा हुआ है?
(v) धार्मिक स्थानों से क्या प्रसारित होना चाहिए?

उ.6.

(1) **वृत्तांत लेखन ।** 5

गणतंत्र दिवस का वृत्तांत

दिनांक २७ जनवरी, २०१८ : शारदा विद्यालय, मुंबई: दिनांक २६ जनवरी, २०१८ के दिन सुबह ७ बजे शारदा विद्यालय में गणतंत्र दिन का आयोजन किया गया। सुबह ७ बजे समारोह की शुरुआत हुई। समारोह के प्रमुख अतिथि के रूप में गृह राज्यमंत्री श्री रामविलास शिंदे उपस्थित थे। जैसे ही प्रमुख अतिथि महोदय जी का आगमन हुआ, वैसे ही स्कूल बैंड व स्काउट के छात्र-छात्राओं ने उनका भव्य स्वागत किया। सुबह ठीक ७ बजकर १५ मिनट पर तिरंगे को सलामी दी गई और राष्ट्रगीत का संगीत के साथ गान किया गया। स्कूल प्रधानाचार्य जी ने अतिथि महोदय को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। विद्यालय की कक्षा ९ वीं के छात्र-छात्राओं ने 'मेरा देश महान' यह लघु नाटक प्रस्तुत किया। कक्षा १० वीं के छात्र-छात्राओं ने 'मेरे देश की धरती' इस गीत पर नृत्य पेश कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रमुख अतिथि महोदय जी ने अपने जोशीले भाषण से सभी का हृदय जीत लिया और सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने अपने भाषण के माध्यम से देशप्रेम, शांति, मानवता आदि मूल्यों से छात्रों को परिचित करवाया। इसके बाद स्कूल विद्यार्थीप्रमुख ने सुबह ठीक ९:३० बजे सभी को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

(2) **निम्न मुद्दों के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए।** 5

तब मचेगी धूम

जब
शुरू होंगे
आडिशन्स

मुंबई आडिशन्स
दिनांक : २० जून, २०१८ - सुबह : १० बजे से

डांस बच्चा डांस

उम्र : १४ से १८ साल

स्थान : केतकी स्कूल, राम नगर, घाटकोपर, मुंबई - ८६.
संपर्क : ९९४५६७८६३४ / ९८९७५६४३४३

(3) **'परहित सरिस धर्म नहिं भाई'** 5

विजयपुर नगर में संजय नाम का एक अमीर जमींदार रहता था। वह बहुत ही दयालु एवं परोपकारी था। यदि लोग उसके पास दान या सहायता के लिए आते तो वह उनकी जरूर से सहायता करता था। उसके द्वार से कोई भी खाली नहीं लौटता था। वह सबकी मदद करता था।

एक दिन उस नगर में एक साधु आया। उसे जमींदार के बारे में लोगों से पता चला कि वह सबकी मदद करता है। इसलिए साधु भी उसके घर गया। साधु को देखते ही संजय ने उसके पाँव छुए और उन्हें बैठने के लिए कहा। उसने बड़े प्यार से साधु का सत्कार किया और उसके खाने का भी प्रबंध करवाया। साधु ने उसके घर में ही अपना डेरा जमाया।

साधु बहुत ही धूर्त व्यक्ति था। उसने संजय को अपने वश में कर लिया और उसकी सारी संपत्ति लिखवा ली। पश्चात उसने संजय को घर से निकाल दिया। संजय अपने परिवार के साथ वहाँ से निकला और जंगल में आकर रहने लगा।

एक दिन उस जंगल में वही साधु शिकार करने आया। एक बाघ का शिकार करते समय वह घायल हो गया। उसे जंगल में खून से लथपथ पड़ा हुआ देखकर संजय ने उसकी मरहम-पट्टी और सेवा की। उसे पता था कि यह वही साधु है; जिसने उसकी सारी संपत्ति हड़प ली थी। फिर भी उसने साधु की सेवा की और उसे मरने से बचाया। आखिर कहा ही गया है: 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई।'

सीख : परोपकार से बढ़कर अन्य कोई धर्म नहीं। हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। हमें किसी के साथ बुरा व्यवहार नहीं करना चाहिए।

अथवा

(4) (i) **मेरा प्रिय वैज्ञानिक** **7**

''भारत माँ का अमर सपूत,
माँ का मान बढ़ाने आया।
परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग में,
अपना हाथ बढ़ाने आया।''

हमारे देश में कई महान वैज्ञानिकों ने जन्म लिया। जिन्होंने अपने कार्य से भारत देश को उन्नति के शिखर तक पहुँचाया। मैं जिनके कार्यों से अत्यंत प्रभावित हूँ, वे हैं - डॉ. होमी जहाँगीर भाभा। ये मेरे प्रिय वैज्ञानिक हैं।

जब पूरा विश्व सभी क्षेत्रो में प्रगति कर रहा था, परमाणु-ऊर्जा जब एक चर्चा का विषय था, उस समय भारत इस क्षेत्र में कहीं भी नहीं था। लेकिन तभी भारत माता के इस अमर सपूत ने अपने परमाणु उर्जा के ज्ञान की चकाचौंध से दुनिया को चकित कर दिया। आज भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में जो कुछ किया, हमारे देश में जितने भी परमाणु - शक्ति स्टेशन हैं, वहा डॉ. भाभा के सफल प्रयासों की वजह से हैं। हमारे देश में परमाणु-ऊर्जा कार्य की शुरुआत १९४५ में डॉ. भाभा ने ही की थी। वे ही 'भारतीय परमाणु ऊर्जा कमिशन' के प्रथ सभापति थे। डॉ. भाभा का जन्म ३० अक्टूबर, १९०९ को मुंबई में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा भी मुंबई में हुई। स्नातक होने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गए।

अपनी पढ़ाई के दौरान उन्हें बहुत से वजीफे और मैडल प्राप्त हुए। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उन्होंने फर्मी और पौली जैसे वैज्ञानिकों के साथ काम किया। १९३७ में भाभा ने कॉस्मिक किरणों के क्षेत्र में वॉल्टर हिटलर के साथ काम किया। अपने इस कार्य के लिए उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली। १९४० में वे भारत लौट आए। १९४५ में डॉ. भाभा ने टाटा अनुसंधान संस्थान की स्थापना की। एक कुशल वैज्ञानिक होने के साथ डॉ. भाभा एक कुशल शासक भी थे। उनके कुशल नेतृत्व में भारतीय वैज्ञानिक परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी

से प्रगति करने लगे। उनके इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप, १९४५ में एशिया का पहला परमाणु रिएक्टर मुंबई के निकट ट्रॉम्बे में स्थापित किया गया।

१९५५ में जेनेवा में हुए संयुक्त राष्ट्र की परमाणु के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए हुई सभा का प्रतिनिधित्व भी डॉ. भाभा ने किया। डॉ. भाभा ही पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने परमाणु बम पर रोक लगाने की पहल की थी। डॉ. भाभा अपनी योग्यता के बल पर ही पहले प्रधानमंत्री पंडित नेहरू और दूसरे प्रधानमंत्री श्री लालबहादूर शास्त्री के वैज्ञानिक सलाहकार थे। डॉ. भाभा के संरक्षण में पहला परमाणु शक्ति स्टेशन तारापुर नगर में बनाया गया। १८ मई, १९६४ को भारत का पहला न्युक्लियर संयंत्र पोखरन (राजस्थान) में डॉ. भाभा के अनुसंधान कार्य के फलस्वरूप स्थापित किया गया।

कुल मिलाकर डॉ. भाभा की वैज्ञानिक सफलताएँ गिनी नहीं जा सकती। ये महान वैज्ञानिक २५ जनवरी, १९६६ में एक वायु दुर्घटना की वजह से स्वर्गवासी हो गए। डॉ. भाभा के सम्मान में ट्रॉम्बे में स्थित परमाणु ऊर्जा संस्थान का नाम 'भाभा परमाणु अनुसंधान' कर दिया गया। डॉ. भाभा एक अच्चे कलाकार भी थे। उन्हें साहित्य और कला में विशेष रुचि थी। उनका जीवन अत्यंत सीधा और सरल था। वे एक अच्छे वक्ता और मधुरभाषी थे। अपने इन महान उपलब्धियों और गुणों की वजह से न सिर्फ वे भारत के बल्कि पूरी दुनिया के चहेते थे। इस महान वैज्ञानिक की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है।

''विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे वह,
नाम था - होमी जहाँगीर भाभा।
अपने ज्ञान के बल पर जिसने,
जीत लिया था दिल दुनिया का।''

(ii) **'यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता'** **7**

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चित दुःखभाग्भवेत्।

इसका अर्थ यह है, दुनिया में सब सुखी व निरोगी रहें; सब भद्र देखें व कोई भी दुखी न हो। दुनिया के सभी लोगों को एक-दूसरे की भलाई के बारे में सदैव सोचना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को भाईचारे की भावना अपनानी चाहिए। हमारी भारतीय संस्कृति इसी विश्व बंधुत्व का संदेश देती है। विश्व बंधुत्व का सही अर्थ है, सबको भाई समझने का भाव। समस्त संसार के विकास के लिए विश्व बंधुत्व जरूरी है।

आज मनुष्य विनाश के कगार पर खड़ा है उसे अपने स्वार्थों ने जकड़ लिया है। वह अपनी स्वार्थ की पूर्ति के लिए भयानक अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण की होड़ लगाए जा रहा है। मनुष्य विनाश के लिए अणुबम व परमाणु बम आदि बनाकर अपनी अपार शक्ति का परिचय दे रहा है। इससे अशांति एवं भयानक वातावरण निर्माण हो रहा है। इसलिए विश्व बंधुत्व वर्तमान युग की माँग है। बच्चों को विश्व-बंधुत्व की शिक्षा देकर ही महात्मा गांधी जी के सपनों को साकार किया जा सकता है। विश्व में शांति की स्थापना हेतु विश्व बंधुत्व की अत्यंत जरूरत है। आज चारों ओर अशांति एवं वैमनस्य का वातावरण

दिखाई दे रहा है। सर्वत्र आराजकता फैली हुई है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की सीमा पर आक्रमण करने के लिए तत्पर है। भारत पर आक्रमण करने के लिए ही कई देश तैयार हैं। वे सिर्फ अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह बहुत ही गलत बात है। इससे विश्व में अशांति फैलेगी। इसे रोकने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को विश्व बंधुत्व को अपनाना पड़ेगा। विश्व में शांति बनाए रखने के लिए इसकी बहुत जरूरत है।

विश्व बंधुत्व एक ऐसा मानवीय गुण है, जिसे अपनाने से सबका भला होगा। संस्कृत सुभाषित में कहा भी गया है:

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

❖❖❖